कह्या सूरज होसी मगरब का, तिनमें नहीं रोसन।
होसी गुलबा जोर दज्जालका, तब ईमान न रेहेसी किन।।५।।

इसलिए लिखा है कि सूर्य पच्छिम में होगा। मुसलमानों के वास्ते बिना रोशनी का होगा, इसीलिए ईमान न रहने से मक्का में दज्जाल का जोर बढ़ा और कोई भी ईमान पर खड़ा नहीं रह सका।

जाहेरी देखें सूरज जाहेर, अजूं मगरब ऊग्या नाहें।
देखें न माएना अंदर, कह्या रोसन नहीं तिन माहें।।६।।

जाहिरी लोग जाहिर में देख रहे हैं कि सूर्य अभी पच्छिम से नहीं उगा। वह अन्दर का अर्थ नहीं लेते जिसमें कहा गया है कि उसमें रोशनी नहीं होगी।

तब सूरज पना क्या रह्या, कही बिन रोसन अंधेर।
सो गया ईमान रह्या कुफर, तिन लई जो दुनियां घेर।।७।।

जिसमें रोशनी न हो वह सूर्य कैसा? मक्का से ईमान उठ गया, कुफ्र रह गया, जो चारों तरफ फैल गया।

॥ प्रकरण ॥ १० ॥ चौपाई ॥ ५५२ ॥

आजूज माजूजका निसान

कहे आजूज माजूज, जाहेर होसी आखिर।
खाए जासी सब सय को, ऐसा होसी बखत फजर।।१।।

कुरान में लिखा है कि आजूज-माजूज आखिर के वक्त जाहिर होंगे। वह सारी दुनियां को खा जाएंगे। फजर के वक्त ऐसी हालत हो जाएगी।

दिवाल कही अष्टधात की, चाटें आजूज माजूज दायम।
पीछे रहे जैसी कागद, सुबा देखें त्योंहीं कायम।।२।।

यह आजूज-माजूज रोज ही अष्टधातु की दीवार को चाटते हैं। अष्टधातु की दीवार मनुष्य तन है और आजूज-माजूज दिन-रात हैं और इसे खा रहे हैं। सायं के समय शरीर थककर कागज के समान हो जाता है और प्रातः फिर तह मोटी हो जाती है।

आजूज माजूज जुफ्त, गिनती लाख चार।
सब पी जासी दुनी पानी ज्यों, टूटे दिवाल न रहे लगार।।३।।

आजूज-माजूज के जोड़ों की गिनती चार लाख की बताई है। यह दुनियां को पानी के समान पी जाएंगी और दीवार टूट जाएगी। फिर कुछ नहीं बचेगा।

तीन फौजां तिन होएसी, तूला ताबा साबा की।
दुनी जिमी सब खाए के, तीर आसमान चलावसी।।४।।

प्रातः, दोपहर और शाम इनकी तीन फौजें होंगी। यह सब जमीन पर रहने वालों को खाकर फिर आसमान की ओर देखेंगे।

Nijanand App

बड़ा कह्या सब चीज से, और आजूज सौ गज का।
चाटे दिवाल अष्टधात की, कहे सुबा तोडूं इन्साअल्ला।।५ ।।

इसलिए आजूज को सबसे बड़ा सौ गज का बताया है जो अष्टधातु की दीवार को चाटता है। सायं को थककर कहता है, इन्शाअल्लाह कल मैं इसे तोड़ दूंगा।

कह्या और भी बड़ा सब चीजोंसे, माजूज बड़ा गज एक।
तंगचस्म चाटे दिवाल को, पीछे फेर कागद जैसी देख।।६ ।।

इससे भी बड़ा माजूज एक गज का बताया है जो आंखें बन्दकर दीवार को चाटता है और फिर कागज के समान पतली देखता है।

ए कही औलाद याफिस की, बेटा नूह नबी का जे।
जो बाप कह्या तुरकस्थान का, देखो मिलाए कबीला ए।।७ ।।

कुरान में आजूज-माजूज को नूह पैगम्बर के बेटे याफिस की औलाद हैं, यह कहा गया है। याफिस को तुर्किस्तान का शासन मिला था। अब यह विचार कर देखो।

इन्साअल्लाताला जो लों ना कहे, तो लों तोड़ न सके दिवाल।
इन्साअल्लाताला केहेसी आखिर, तब टूटसी कागद मिसाल।।८ ।।

जब तक खुदा न चाहेंगे तब तक यह आजूज-माजूज इस दीवार को न तोड़ सकेंगे। खुदा आखिर के समय हुकम करेंगे तथा यह कागज के समान दीवार टूट जाएगी।

आजूज माजूज जाहेर हुए, जो नाती नूह पैगंमर।
खात जात हैं दुनी को, क्यों देखें बातून बिगर।।९ ।।

आजूज-माजूज का अब पता लगा है कि नूह पैगम्बर के पोते हैं, अर्थात् यह सारी दुनियां को खा रहे हैं। इस रहस्य के बातूनी भेद को समझे बिना क्या पता चलेगा?

सो ए निसान क्यों देखिए, ऊपर जाहेरी नजर।
जाए ना इलम हक का, सो देखें क्यों कर।।१० ।।

जाहिरी नजर से इन कयामत के निशानों के भेद कैसे समझे जा सकते हैं? जिन्हें श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि का ज्ञान नहीं मिला, वह इस रहस्य को कैसे समझेंगे?

निसान सब जाहेर हुए, जो दुनी देखे सहूर कर।
जो खोल देखे आंखें रूहकी, तो देखे हुई फजर।।११ ।।

दुनियां यदि विचार करके देखे तो कयामत के सभी निशान जाहिर हो गए हैं। यदि आत्मदृष्टि से देखें तो ज्ञान का सवेरा हो गया है।

निसान सब जाहेर हुए, आई बड़ी दरगाह से पुकार।
चाक चढ़ी सब दुनियां, पर क्यों देखे बिना विचार।।१२ ।।

मक्का से वसीयतनामे लिखकर आ गए हैं। कयामत के सभी निशान जाहिर हो गए हैं। जो दुनियां मरने जीने के चक्कर में घूम रही है, वह बिना विचार किए इन निशानों को कैसे समझ सकती है?

Nijanand App

हुए हिजाब आदम अकलें, हक गुझ पाइए हक इलम।
ले माएने दुनी उपले, तासों जाहेर होत जुलम।। १३ ।।

दुनियां की अक्ल पर परदा पड़ गया है। खुदा के छिपे रहस्यों को जागृत बुद्धि के ज्ञान से ही जाना जा सकता है। ऊपर के मायने लेने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है। बड़ा जुल्म होता है।

एता दिल मजाजी न बूझहीं, जो नाती नूह नबी के।
ए निजस हराम क्यों खाएसी, क्यों पावें माएना जाहेरी ए।। १४ ।।

झूठे दिल वाले इतना भी नहीं सोचते कि नूह पैगम्बर के पोते बीच दुनियां को क्यों खाएंगे। जाहिर लोग इसका अर्थ नहीं समझ पा रहे हैं।

पढ़े करें माएना आजूज माजूज, जो नाती नूह नबी के।
सो क्यों खाए नापाक दुनियां, पाक पैगंमर–जादे।। १५ ।।

पढ़े-लिखे लोग अर्थ करते हैं कि नूह पैगम्बर के पोते नापाक दुनियां को कैसे खा सकते हैं जो पैगम्बर याफिस की औलाद हैं।

पढ़े दुनी मुसाफ आखिरी, खोले माएना बीच मुस्लिम।
कहे पाकों को कुफर, होए ऐसा जाहेरी माएनों जुलम।। १६ ।।

अब आखिर के समय में कुलजम सरूप की वाणी को पढ़कर मोमिनों के बीच इसके भेद खोल दिए हैं। अब पाक आजूज-माजूज को कुफ्र कहने से जुल्म होता है।

होत जुलम माएनों जाहेरी, तो भी छोड़ें ना ए सनंध।
क्या करें हक इलम बिना, कहा देखीता ही अंध।। १७ ।।

जाहिरी अर्थ करने से जुल्म होता है। फिर भी दुनियां जाहिरी मायने ही लेती है। यह करें भी क्या? जागृत बुद्धि की वाणी के बिना देखते हुए भी अन्धे हैं।

इनमें लिखी इसारतें, निसान पाइए नजर बातन।
लिए ऊपर के माएने, क्यों पाइए कयामत दिन।। १८ ।।

कुरान में सब बातें इशारों में लिखी हैं और इन बातों के भेद बातूनी नजर में ही समझे जा सकते हैं। ऊपर के मायने लेने से कयामत के दिनों का पता नहीं लगेगा।

पढ़े कहें दिन कयामत. हकें रखे अपने हाथ।
या तो हक आपै खोलहीं, या हादी खोलें जो हक साथ।। १९ ।।

पढ़े-लिखे लोग कहते हैं कि कयामत के दिन को खुदा ने अपने हाथ में रखा है। अब उसे स्वयं खुदा ही प्रगट करेंगे या उनके साथ में जो हादी होंगे, वह जाहिर करेंगे।

हक हाथ दिन तो कहे, जो हकें आप छिपाए।
सो निसान पाए दिन पाइए, सो जाहेर दुनी क्यों देख्या जाए।। २० ।।

श्री राजजी महाराज ने कयामत के दिन को अपने हाथ में छिपाकर रखा। यह इसलिए कि जब इमाम मेंहेंदी दुनियां में प्रगट हों, तो सबको जाहिरी में खबर मिल जाए।

Nijanand App

जो जाहेरी देखें जाहेर, माएने तो छिपे निसान।
निसान देखोगे दिन कयामत, सो क्यों होए जाहेरियों पेहेचान।। २१ ।।

जाहिरी दुनियां वाले लोग कुरान के निशानों को जाहिरी नजर से देखते हैं, जबकि उनके बातूनी अर्थ छिपे हैं। उनके बातूनी अर्थ कयामत के समय जाहिर होंगे, तो फिर इस कयामत के दिन की पहचान जाहिर लोगों को कैसे हो?

जो कयामत देखावते जाहेर, तो निसान भी करते जाहेर।
तो करते ना यों इसारतें, जो दुनी देखावते बाहेर।। २२ ।।

यदि उस समय कयामत जाहिरी रूप से करनी होती तो निशानों को भी जाहिरी लिख देते। फिर वह इस तरह की बातें इशारतों में न लिखते और दुनियां वालों को सब कुछ समझ में आ जाता।

बड़ा कह्या सब चीजों से, ले जिमी लग आसमान।
दिन बीच दुनी की दौड़त, सौ तरफ खाहिस जहान।। २३ ।।

आजूज को सब चीजों से बड़ा आसमान तक सौ गज का कहा है। आजूज दिन है और दिन में इन्सान की चाहना सौ तरफ दौड़ती है।

बड़ा कह्या इन माएनों, करी रोसन आकास जिमी।
सौ गज कहे सौ तरफों के, दौड़े खाहिस दिन आदमी।। २४ ।।

आजूज को इसीलिए सौ गज का बड़ा कहा है कि आदमी की इच्छाएं जमीन से आकाश तक सौ तरफ दौड़ती हैं।

योंहीं कह्या बड़ा माजूज, हुई रात आकास जिमी ले।
दुनी आंख मूंदे बीच रात में, भई दिस मानिंद एक गज के।। २५ ।।

इसलिए माजूज को बड़ा कहा है। माजूज रात को कहा है, जिसमें दुनियां जमीन से आकाश तक आंखें बन्दकर सोती है, इसलिए उसको एक गज का कहा है, क्योंकि इन्सान की चाहनाएं एक तरफ हो जाती हैं।

जो सय आई दिनमें, तिन सबों खाहिस सौ तरफ।
सोई सबों एक तरफ रातकी, ए देखो माएने कर हरफ।। २६ ।।

दिन के अन्दर इन्सान की चाहना सौ तरफ होती है और वह सब तरफ से सिमटकर रात को एक तरफ हो जाती है। इन हरफों के अर्थ को समझो।

जो कह्या सौ गज का, सो सब से बड़ा क्यों होए।
और भी कह्या सबसे बड़ा, तो क्यों एक गज कह्या सोए।। २७ ।।

जिसे सौ गज का बड़ा कहा है उससे बड़ा एक गज वाला कैसे हो गया?

दिवाल कही दुनी उमर, ए टूटे रहे न कोए।
खाएंगे एही सबन को, उमर चाट काटत हैं दोए।। २८ ।।

दुनियां की उमर को अष्टधातु की दीवार कहा है जिसको यह आजूज-माजूज (दिन-रात) चाटते रहते हैं। जब महाप्रलय होगी तो कुछ नहीं बचेगा।

Nijanand App

जाहेरी कहें दिवाल, हद बांधी सिकंदर।
सो तो जाहेर किन देखी नहीं, बिन माएने खुले अंदर।। २९ ।।

जाहिरी लोग कहते हैं कि सिकन्दर बादशाह ने अष्टधातु की दीवार बनाई थी। उसे आज दिन तक किसी ने देखा ही नहीं और बिना इसके रहस्य को समझे भेदों का पता चलता नहीं।

ए रात दिन काल दुनी के, एही काटें दायम उमर।
एही खासी सब सय को, दिन पूरे कर फजर।। ३० ।।

यह दिन-रात दुनियां की उम्र को चाटते रहते हैं। यही सवेरा होने तक सब संसार को खा जाएंगे।

आजूज माजूज हुए जाहेर, केता किया दुनी पर मार।
अजूं न देखे दुनी स्याह दिल, जो पड़ी आलममें एती पुकार।। ३१ ।।

आजूज-माजूज अब जाहिर हो गए हैं। उन्होंने दुनियां को कितना परेशान कर रखा है। सारी दुनियां में हाय-तोबा मचाते हैं। फिर भी यह काले दिल वालों की समझ में नहीं आ रहा है।

औलाद कही याफिस की, जाके भाई स्याम हाम।
ए तीनों से पैदा सब दुनी, ए लिख्या बीच अल्ला कलाम।। ३२ ।।

यह याफिस पैगम्बर की औलाद कहे गए हैं, जिसके भाई स्याम और हाम थे। कुरान में लिखा है कि सारी दुनियां स्याम, हाम और याफिस की ही औलाद है।

ए तीनों भाइयों की पेहेचान, दुनी को होसी हक इलमें।
एक दीन होसी सबे, जब लई बूझ सबों दिलमें।। ३३ ।।

इन स्याम, हाम और याफिस तीनों भाइयों की पहचान जागृत बुद्धि के ज्ञान तारतम वाणी से होगी। जब यह बात सबकी समझ में आ जाएगी, तब सब एक दीन को मानने वाले हो जाएंगे।

जो लों ले ऊपर के माएने, तो लों कबूं न बूझा जाए।
सक छोड़ न होवे साफ दिल, जो पढ़े सौ साल ऊपर जुबांए।। ३४ ।।

जब तक ऊपर के मायने लेंगे, तब तक बात समझ में नहीं आएगी। चाहे कुरान सौ साल पढ़ें, उनके संशय नहीं मिटेंगे और न दिल ही साफ होंगे।

इसारतें रमूजें अल्लाह की, सो लेकर हक इलम।
सो खोले रूहअल्लाह की, जिन दिल पर लिख्या बिना कलम।। ३५ ।।

अल्लाह की इशारतें और रमूजें जो कुरान में लिखी हैं, वह अल्लाह की जागृत बुद्धि के ज्ञान तारतम वाणी से श्यामा महारानी के अंग सुन्दरसाथ ही खोलेंगे। यह ज्ञान उनके दिलों में बिना कलम के लिखा हुआ है।

महामत कहे ए मोमिनों, खोल दिए चार निसान।
और भी तीन केहेत हों, ले बातून देखो दिल आन।। ३६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! कयामत के चार निशानों के भेद खोल दिए हैं। तीन निशानों का और विवरण करती हूं, जिनके बातूनी रहस्यों को दिल से समझो।

॥ प्रकरण ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ ५८८ ॥

Nijanand App